

आपदाकाल में मीडिया की भूमिका: कोरोनाकाल के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन

संगीता शर्मा शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जन संचार यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

सारांश: समय का पहिया घूमता रहता है और प्रकृति एवं समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। कभी यह परिवर्तन मानव के लिए सकारात्मक प्रभाव लाते हैं तो कभी नकारात्मक परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है। आपदा काल मनुष्य के लिए नकारात्मक समय साबित होता है। ऐसे में संकटों से उबरने में कई बार मानव को लंबा समय लग जाता है तो कई बार परिस्थितियां अनुकूल भी हो जाती हैं। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया का विशेष योगदान रहता है।

पिछले 2 वर्षों में विश्व कोरोना महामारी की विभीषिका से गुजरा है। संपूर्ण विश्व को इस ने प्रभावित किया। भारत में भी सरकार ने इसे राष्ट्रीय आपदा घोषित किया। भारतीय इतिहास में ऐसी जानलेवा आपदा का सामना लोगों ने पहली बार किया। बीमारी के आरंभ में लोगों को पता ही नहीं था किस तरह इस विपत्ति का सामना करना है। नतीजन खूब संक्रमण फैला और लाखों लोगों ने अपनों को खोया। २२ मार्च 2020 को भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनता कर्फ्यू लगाया गया और इसके बाद से ही पूरे भारत में लोक डाउन का क्रम चला। लोग घरों में कैद हो गए। सुनसान, बियाबान सड़के हर और डर को बयां कर रही थी। गरीब और दिहाड़ी मजदूर दाने-दाने को मोहताज हो गए। घर से बाहर निकले तो संक्रमण का डर और घरों में रहे तो पेट की भूख। ऐसा दृश्य पहले कभी नहीं देखा गया। ऐसे में संचार सूचना अर्थात मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैसी सूचना लोगों तक पहुंचाई जाती है वैसा ही माहौल बनता है। चाहे वह सकारात्मक अथवा नकारात्मक संचार। दोनों तरह के संचार मनुष्य के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। नकारात्मक संचार जहां तनाव, हिंसा व नफरत आदि के भाव उत्पन्न करता है वहीं सकारात्मक संचार आत्मविश्वास, साहस व आशावान बने रहने एवं आनंद का संचार करता है। यहां कोविड-19 के दौरान मीडिया द्वारा निभाई गई भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है कि संकट काल में किस तरह का संचार मीडिया ने किया एवं लोगों पर उसका क्या प्रभाव पड़ा।

कूटशब्द- आपदा, विभीषिका, बियावान, सकारात्मक संचार, नकारात्मक संचार

भूमिका:

आपदा प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों का परिणाम है जो जान और माल की गंभीर क्षति करके अचानक सामान्य जीवन को उस सीमा तक अस्तव्यस्त करता है, जिसका सामना करने के लिए उपलब्ध सामाजिक तथा आर्थिक संरक्षण कार्यविधियां अपर्याप्त होती हैं अर्थात आशंकित विपत्ति का वास्तव में घटित होना आपदा है। आपदा का अर्थ किसी भी क्षेत्र में प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से होने वाली दुर्घटना, घटना, या गंभीर घटना, या दुर्घटना या लापरवाही से है जिसके परिणामस्वरूप जीवन का पर्याप्त नुकसान होता है या मानव पीड़ा या क्षति, और संपत्ति का विनाश, या क्षति, या पर्यावरण का क्षरण होता है तथा वह घटना ऐसी प्रकृति और परिमाण की हो जिस से उबर पाना प्रभावित क्षेत्र के समुदाय की क्षमता से परे हो।

उत्पत्ति के अनुसार आपदाएं प्राकृतिक और मानव निर्मित होती हैं। प्राकृतिक आपदाओं को विभिन्न प्रकारों के रूप में देखा जा सकता है। वायुजनित आपदा जैसे तूफान, चक्रवाती पवन, चक्रवात, समुद्री तूफानी लहर आदि। जलजनित आपदाओं में बाढ़, बादल का फटना, सुखा आदि शामिल होता है। धरती जनित आपदा को देखे तो भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी, भूस्खलन, इत्यादि। वही रोग रूपी आपदा में एड्स, प्लेग, डेंगु, चिकनगुनिया, मलेरिया आदि। मानव जनित आपदाओं के अंतर्गत औद्योगिक दुर्घटना, पर्यावरणीय हास, विभिन्न युद्ध, आतंकी गतिविधियों आदि को शामिल किया जा सकता है। वर्तमान समय में धर्म और जिहाद के नाम पर अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु दहशत फैलाने के उद्देश्य से विभिन्न आतंकवादी घटनाएँ एक महत्वपूर्ण मानवनिर्मित आपदा के रूप में सामने आई है। इसके साथ युद्ध के विभिन्न रूपों के अंतर्गत जैविक युद्ध के लिए अनुकूल वातावरण में विभिन्न जीवाणु और विषाणुओं के साथ साथ घातक कीटों का संवर्धन कर उन्हें डिब्बों में बंद कर शत्रु कैम्पों पर विमान से छोड़ दिया जाता है जो अंततः पर्याप्त क्षेत्र में फैलकर महामारी का रूप ले लेता है।

आपदाओं से नुकसान

आपदा चाहे मानव निर्मित हो अथवा प्राकृतिक, यह किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं प्रगति के लिए बाधक होती है और उस देश को विकास क्रम में कई वर्ष पीछे धकेल देती है साथ ही इन दोनों ही तरह की आपदाओं से न जाने कितने ही लोगों की मौत हो जाती है वही करोड़ों रुपए की संपत्ति का नुकसान भी हो जाता है जिस पर किसी का वश नहीं चल पाता।

शोध के उद्देश्य

- आपदा के ठीक पूर्व एवं आपदा के दौरान और तत्काल बाद मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना।
- सरकार, प्रभावितों एवं समाज द्वारा सूचनाओं के प्रति उत्तर में की गई कार्यवाही का अध्ययन।
- आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता फैलाने में जन संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन।
- आपदा के समय पीडित समाज तक मीडिया की पहुंच का अध्ययन।
- तकनीकी स्तर और सूचना के उत्पादन, संप्रेषण पक्षों में कमियां और भविष्य में इन कमियों के निवारण की दिशा तय करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन दिवतीयक स्त्रोतों पर आधारित है। अध्ययन में विभिन्न जर्नल, पत्रिका, वेबसाइट्स और शोध आलेखों के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

कोरोना महामारी का परिचय एवं प्रकोप

वर्ष 2019-20 में विश्वव्यापी महामारी कोरोना वायरस, कोविड-19 ने कहर बरपाना आरम्भ किया। विश्व के अन्य देशों के साथ भारत भी इस से अछूता ना रहा। कोविड 19 ने सबसे पहले चीन में कहर बरपाना शुरू किया। इसके बाद कोरोना ने यूरोप, अमेरिका, मिडिल ईस्ट और भारत में कहर बरपाना शुरू कर दिया। कोरोना से चीन में मौतों का आंकड़ा एक करोड़ को पार गया। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय ने 5 सितंबर 2022 तक इस वायरस से भारत में 3,37,66,707 मामलों की पुष्टि की है जिसमें 4,48,339 लोगों की मृत्यु हुई है। भारत में कोविड-19 संक्रमण के 2.67 करोड़ मामले, दुनिया में (संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद) दूसरे सबसे अधिक पुष्ट मौत के मामले हैं और कोविड-19 मौतों - 307,231 के साथ, तीसरी सबसे बड़ी संख्या (संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्राजील के बाद) हैं। 30 जनवरी को, भारत के केरल राज्य में कोविड-19 का पहला मामला दर्ज किया गया था और 3 फरवरी तक बढ़कर संख्या तीन हो गयी। सभी छात्र चीन के वूहान से लौटे थे। इसके बाद मार्च के महीने में संक्रमित मामलों की संख्या बढ़ गयी जिसमें से ज्यादातर लोग विदेश से लौटे थे। 12 मार्च को, एक 76 वर्षीय व्यक्ति जो सऊदी अरब से लौटा था जिसकी मृत्यु हुई और यह देश में कोरोना वायरस से होने वाली पहली मृत्यु थी। 15 मार्च को पुष्ट मामलों की संख्या 100 हुई जबकि, 28 मार्च को 1,000, 2 अप्रैल को 2,000 और 4 अप्रैल को 3,000 से अधिक लोग संक्रमित हुए। 1 अप्रैल को मरने वालों की संख्या 50 और 5 अप्रैल को 100 पार कर गई। वहीं 6 अप्रैल को कुल संक्रमित मामले 4000 पार कर गए थे।

हालात और भी खराब हो सकते थे यदि सरकारें जल्दी से नहीं चेतती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 मार्च को जनता कर्फ्यू लगाया और फिर हालात बिगड़ने का अंदेशा हुआ तो पीएम ने पूरे देश में 21 दिन का लॉक डाउन करने का निर्णय दिया। इसका असर भी देखने को मिला और लोगों के घर से बाहर निकलने पर रोक लगी। जिस तेजी से चीन, यूरोप एवं अमेरिका में यह रोग फैला। हिन्दुस्तान में कोरोना की पहली लहर उस तेजी से नहीं फैली। लेकिन दूसरी लहर ने जमकर कहर बरपाया। लाखों लोग इसकी चपेट में आए। कई जानें चली गईं। लोगों की नौकरियां चली गईं। मजदूर और गरीब लोग रोजी-

रोटी के मोहताज हो गए। काम धंधे सब चौपट हो गए। कई परिवार तबाह हो गए। मजदूर परिवार पैदल ही पलायन को मजबूर हो गए। ऐसा दर्दनाक मंजर पहली बार देखा गया। श्मशानों में लाशों के ढेर लग गए। अस्पतालों में पांव रखने की जगह नहीं रही। कई मरीजों ने इलाज के अभाव में दम तोड़ा। हर तरफ हाहाकार और बद्तर हालात हो गए। इस महामारी ने साक्षात मौत का मंजर दिखाया। हर तरफ मौत का ऐसा तांडव था कि लोग अपनों को आंखों के सामने दम तोड़ने को देखने को मजबूर हो गए।

देश की आर्थिक व्यवस्था और लोक परंपराओं पर भी इसका गहरा असर देखा गया। स्कूल-कॉलेज, दफ्तर सब बंद हो गए। परीक्षाएं बंद। सिनेमाघर भी बंद। बस, रेल एवं हवाई सेवाएं बंद हो गईं। कुल मिलाकर इस वैश्विक बीमारी ने न केवल आर्थिक व्यवस्था बल्कि, देशों की सांस्कृतिक एवं पारंपारिक व्यवस्थाओं पर गहरा आघात किया।

मानव समाज और संचार

21वीं सदी के सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में जनसंचार के माध्यमों का बहुत तेजी से विकास एवं प्रसार हुआ है। डिजिटल मीडिया के बढ़ते उपयोग एवं विकास ने तो संचार के क्षेत्र में क्रांति ही ला दी है। आज हर आम से आम आदमी के पास पलक झपकते ही सूचनाओं का संसार उपलब्ध है। आपदाओं के दौरान सरकार के साथ जन संचार माध्यमों की भी अति महती भूमिका होती है। इस दौरान इन माध्यमों को अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करना होता है। देखा जाए तो 21वीं सदी का जनसंचार हमारे जीवन एवं राष्ट्रीय विकास और उसकी दिशा निर्धारण का एक अभिन्न अंग बन चुका है। 20 वीं शताब्दी में सूचना संप्रेषण में टेलीविजन ने नई भूमिका का प्रारंभ किया। प्रिंट एवं श्रव्य माध्यम से कहीं ज्यादा प्रभावी यह दृश्य माध्यम साबित हुआ है। सदी के उत्तरार्ध में कंप्यूटर के आगमन से तो जैसे सूचना में क्रांति आ गई। इसका बेहद प्रभावशाली, उच्च तकनीकी और कहीं ज्यादा विशाल रूप इंटरनेट के रूप में पूरे विश्व में स्थापित हो गया है। पिछले चार दशकों में संचार की गति, प्रकृति एवं प्रभावोत्पादकता का पूरी दुनिया में मात्रात्मक बदलाव के साथ गुणात्मक बदलाव भी हुआ। मानव समाज में अभिष्ट की प्राप्ति में आज संचार की भूमिका खासी वृहद रूप ले चुकी है। आज के युग में संचार के विशेष उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। एक व्यक्ति, समूह या समाज के विकास की मुख्यधारा में सहभागी एवं सहगामी बने रहने के लिए संचार का महत्व सदैव बना रहता है। व्यक्ति का व्यक्ति से, व्यक्ति का समूह से या समूह का व्यक्ति से, समूह का समूह से, किसी राज्य के शासकों का शासितों से या जनता का शासकों से और दुनिया में एक देश का दूसरे देश से अंतर संबंध संचार के बिना संभव नहीं है। तब चाहे संचार का भौतिक ढांचा कितना पिछड़ा ही क्यों न हो, उसकी अनिवार्यता रहती है। जनसंचार माध्यमों के विशाल दायरे की वजह से इसका प्रयोग इनके संचालक औजार की भांति कर सकते हैं जिस वजह से जनसंचार माध्यमों के उपयोग का विषय काफी गंभीर, उत्तरदायित्वपूर्ण बन जाता है। युद्धकाल, महामारी, विप्लव, दंगों और प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भ में संवेदनशीलता भी प्रमुख जरूरत बन जाती है। असामान्य प्रकृति की ऐसी परिस्थितियों में एकदम सही तथ्यों का संक्षेप में और स्पष्टतायुक्त भाषा में सूचना का संप्रेषण सूचना के उत्पादनकर्ताओं की जिम्मेदारी बन जाती है।

मीडिया की भूमिका

कोरोनाकाल मीडिया की कठिन परीक्षा का समय सिद्ध हुआ। रिपोर्टिंग के सम्मुख संक्रमण ग्रस्त क्षेत्र से जमीनी रिपोर्टिंग की एक ऐसी चुनौती आई जो वांछनीय नहीं है, विषम परिस्थितियों में जब संचार ढांचा लगभग लकवाग्रस्त हो गया, बीमारी के डर से सड़कों पर सन्नाटा पसर गया, आम और खास दोनों के मन में मौत का डर गहरे तक समा गया था, पत्रकारों के लिए खुद की जान बचाते हुए पत्रकारिता को अंजाम देना एक बहुत ही दुश्कर कार्य हो गया था। ऐसे में रिपोर्टिंग का कार्य असामान्य व चुनौतीपूर्ण था साथ ही पत्रकारों के लिए नई पाठशाला भी। आरम्भ में रिपोर्टिंग के जो विवरण रहे वे बिखरे हुए, सटीक जानकारी से रहित व कोरोनाग्रस्त क्षेत्र के भुक्तभोगियों के ज्यादा थे। मीडिया ने जब बार बार बीमारी से संबन्धित समाचार प्रसारित किए तब इस महामारी की व्यापक क्षति का अनुमान लगाया।

मीडिया ने निभाई संजीदा भूमिका

लाइव हिन्दूस्तान डॉट कॉम की रिपोर्ट के अनुसार कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के वक्त में सूचनाओं के प्रसारण, विश्लेषण और आयामों को लेकर जिस तरह की संजीदा भूमिका मीडिया ने अदा की है, वह अत्यंत ही प्रशंसनीय व सराहनीय है। मार्च माह से ही इस वैश्विक महामारी के दौरान मीडिया ने सूचना, शिक्षा, जागरूकता के मामले में समाज के अहम और विश्वसनीय साझेदार की भूमिका निभाई है। ताकि देश के लोगों को इस संकट से उबरने में जागरूक किया जा सके और वे खुद को कोरोना संक्रमण से बचा सके। दैनिक जागरण की रिपोर्ट के अनुसार जब कोई भी मुश्किल की घड़ी सामने होती है तब लोगों को उसके पीछे के कारण और परिणाम तथा उससे बचाव की जानकारी की जरूरत होती है। ऐसे में लोगों की इन सभी जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी मीडिया की होती है। कोरोना महामारी के वक्त में लोगों को मास्क पहनने, सामाजिक दूरी का पालन करने, हाथों को लगातार धोने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नियमित व्यायाम को अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका प्रशंसनीय रही।

महामारी के नाजुक दौर में उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति एम वेंकैया नायडू ने कोरोना संकट के दौर में मीडिया की अहम भूमिका के लिए मीडिया वर्ग की सराहना की। “उन्होंने कहा कि प्रतिबंधों के कारण अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है और मीडिया को विज्ञापनों से मिलने वाले राजस्व में भी कमी आई है। कई मीडियाकर्मियों के वेतन में भी कटौती हुई है, लेकिन इन सबके बावजूद ऐसे नाजुक दौर में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभा रहे हैं। हालांकि उन्होंने टेलीविजन के कुछ वर्गों को सचेत करते हुए कहा कि उन्हें ऐसे गंभीर वक्त में जिम्मेदारी से काम करना चाहिए, ताकि लोगों के बीच कोई गलत खबर ना जाए।

संचार माध्यमों ने किया जनता को मानसिक रूप से तैयार

डॉ. आनंद प्रधान के शोध पत्र “स्वास्थ्य और संकट संचार के क्षेत्र में गंभीर शोध की जरूरत” के अनुसार कोविड-19 के दौरान महामारियों के प्रबंधन से लेकर उनसे निपटने में एक बार फिर संचार और मीडिया की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया जा रहा था, खासकर इस महामारी से निपटने में आमजन की व्यक्तिगत और सामूहिक सतर्कता, सजगता और सावधानियों के मद्दजर लोगों को जागरूक बनाने, उन्हें महामारी से निपटने के लिए मानसिक रूप से तैयार करने और उनके व्यवहार में अनुकूल बदलाव लाने में संचार और मीडिया की रणनीतिक भूमिका और महत्त्व पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया। कहने की जरूरत नहीं है कि इस महामारी ने एक बार फिर संचार अध्ययन और खासकर उसके उप-क्षेत्रों स्वास्थ्य संचार, संकट संचार (रिस्क कम्युनिकेशन) और सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन संचार की ओर नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं और संचार विशेषज्ञों का ध्यान खींचा। दुनिया के अधिकांश देशों की तरह भारत में भी बड़े पैमाने पर प्रशिक्षित स्वास्थ्य संचारकों की जरूरत महसूस की जा रही है। यही नहीं, कोविड-19 ने महामारियों खासकर संक्रामक महामारियों से निपटने में उसके इलाज से ज्यादा बचाव और रोकथाम के महत्त्व को रेखांकित किया है। बचाव और रोकथाम के लिए अनुकूल माहौल बनाने में जन माध्यमों और प्रशिक्षित स्वास्थ्य संचारकों के साथ-साथ मीडियाकर्मियों को भी प्रशिक्षित करने और संवेदनशील बनाने की जरूरत है।

मुश्किल समय में प्रिंट मीडिया ने निभाई जिम्मेदारी

महामारी के बढ़ते संक्रमण के दौरान एक दौर ऐसा भी आया जब सबसे विश्वसनीय माने जाने वाले मीडिया माध्यम अखबार पर संकट के बादल मंडरा गए, लेकिन अखबार मुश्किल दौर में भी तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए लोगों तक सटीक सूचनाएं पहुंचाने में पीछे नहीं हटे। कुमार कौस्तुभ की शोध रिपोर्ट “कोरोना संकट में भारतीय प्रिंट मीडिया और भविष्य की चुनौतियां” के अनुसार प्रिंट मीडिया ने यह साबित भी कर दिखाया कि कोविड-19 कोरोना वायरस के विश्वव्यापी प्रकोप के इस दौर में भी उसने कितनी मजबूती से अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। भले ही अब देश - दुनिया में टेलीविजन के साथ-साथ ऑनलाइन मीडिया का जोर है लेकिन प्रिंट मीडिया यानी अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं ने भी न सिर्फ अपनी प्रासंगिकता बरकरार रखी, बल्कि उनके साथ कदम से कदम मिलाकर बढ़ने को अग्रसर रहा है। हालांकि, कोरोना संकट काल में टेलीविजन और ऑनलाइन मीडिया के मुकाबले प्रिंट मीडिया के लिए हालात कहीं अधिक विपरीत होते दिखे। एक प्रकार से देखें तो मार्च-अप्रैल 2020 के दौरान कोरोना के बढ़ते प्रकोप के बीच प्रिंट मीडिया के वजूद पर ही प्रश्नचिह्न खड़े होने लगे थे। तब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने प्रकाशन के माध्यम से साफ किया कि अखबारों से संक्रमण का अंदेशा नहीं

है। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने अपने एक ट्वीट में कहा कि, "अखबार पढ़ने से कोरोना नहीं फैलता। इनसे सटीक जानकारी और जागरूकता फैलती है। इसे पढ़ने के बाद हाथ धोना ही काफी है।"

सामुदायिक रेडियों पर बढ़ी विश्वसनीयता

कुछ अध्ययनों के अनुसार जहाँ दुनिया भर में इण्टरनेट और सोशल नेटवर्क पर आमजन के विश्वास में, गिरावट देखने को मिली है। वहीं सामुदायिक मीडिया में लोगों का विश्वास बढ़ा। 'युरोपीय ब्रॉडकास्टिंग यूनियन' द्वारा हाल ही में जारी की गई एक रिपोर्ट, 'ट्रस्ट इन मीडिया' में वैश्विक स्तर पर पारम्परिक और ऑनलाइन मीडिया के बीच 'विश्वास की खाई' उजागर हुई। हालाँकि, इसमें यह भी स्पष्ट हुआ कि विश्वसनीय जानकारी के लिये लोग ज़्यादातर सार्वजनिक प्रसारकों पर भरोसा करते हैं, जोकि विश्व स्तर पर 60 प्रतिशत से अधिक बाज़ारों में समाचारों का सबसे विश्वसनीय स्रोत माने गए। एक वैश्विक सर्वेक्षण के अनुसार, विकासशील देशों में 75 प्रतिशत से अधिक आबादी तक पहुँच के साथ, रेडियो सबसे सुलभ माध्यम है। यही कारण है कि कोरोनावायरस संकट पर जवाबी कार्रवाई में यह सबसे महत्वपूर्ण औज़ार रहा।

दूरदर्शन और आकाशवाणी का भी योगदान

" 17वें एशिया मीडिया शिखर सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि सशक्तिकरण के एक प्रभावी साधन के रूप में मीडिया में लोगों की धारणाओं और दृष्टिकोणों को आकार देने की अपार क्षमता होती है। मंत्री ने कहा कि मीडिया ने यह सुनिश्चित किया कि देश में सभी लोगों तक कोविड जागरूकता संदेश, महत्वपूर्ण सरकारी दिशा-निर्देश और डॉक्टरों के साथ मुफ्त परामर्श आसानी से पहुंचे। उन्होंने कहा कि दूरदर्शन और आकाशवाणी ने सार्वजनिक सेवा के अपने कार्यदेश के अनुरूप महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो त्वरित कवरेज, जमीनी रिपोर्ट और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर कार्यक्रमों के माध्यम से रुझान को स्थापित करने में उनकी भूमिका से सिद्ध होता है। कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में 1.3 बिलियन आबादी का टीकाकरण करना बेहद चुनौतीपूर्ण था, सरकार, कोविड योद्धाओं और नागरिक समाज के संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप भारत ने अपनी अधिकांश आबादी का टीकाकरण पूरा कर लिया है। इसमें मीडिया का योगदान जागरूकता फैलाने में सबसे महत्वपूर्ण रहा।

कोरोना काल में मीडिया द्वारा सकारात्मक संचार के उदाहरण

स्वच्छता और स्वास्थ्य की ओर बढ़ाएँ कदम,

आओं कोरोना के ख़ात्मे की ओर बढ़ें हम।।

ये जन-जन ने ठाना है, कोरोना को दूर भगाना है।

ऐसे नारों और स्लोगन की गूंज दूर-दूर तक मीडिया के माध्यम से सुनाई दी। भारत का वर्षों पुराना सपना "स्वच्छ भारत हो अपना" अब साकार होता दिखाई दे रहा है, सभी गांव, गली, मोहल्ले, शहर स्वच्छ होते दिख रहे हैं। स्वच्छता सबकी प्राथमिकता बन गई है। व्यक्ति में जगह-जगह गंदगी फैलाने की प्रवृत्ति अब दूर होती नजर आ रही है। आज चौपालों, शहरों में एक ही चर्चा है, कोरोना से उसी का जीवन बचेगा जिसमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होगी। ना किसी की डिग्री काम आ रही है और ना योग्यता, ना दौलत-पैसा और ना ही गाड़ी-दुकान। सिर्फ बेहतर स्वास्थ्य ही जीवन का आधार बन गया है। मनुष्य अनुशासित जीनव जीने की ओर अग्रसर हो रहा है। स्वच्छ भारत सर्वेक्षण की रिपोर्ट में यह देखा गया कि 86.2 प्रतिशत लोग अपनी स्वच्छता की ओर जागरूक हुए हैं। वहीं 71.5 प्रतिशत लोग अपनी साफ-सफाई का पूरा ख्याल रख रहे हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक समय के बदलते हुए परिवेश में मीडिया का योगदान इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि आज के आधुनिक समाज की लगभग 95% जनसंख्या इन माध्यमों का प्रभाव स्वीकार रही है। महामारी के समय जब मौत का तांडव फैला हुआ था लोग

बाहर निकलने से भी कतरा रहे थे, उस समय मीडिया कर्मी अपनी जान पर खेलकर लोगों तक महत्वपूर्ण सूचना पहुंचा रहे थे। जनसंचार के माध्यम न होते तो देश दुनिया इस बिमारी के बारे में पूरी तरह जान भी न पाती। कोरोना संकटकाल में मीडिया ने जिस प्रकार अपनी जिम्मेदारी को समझा और जिस कौशलपूर्ण तरीके से अपनी भूमिका को निभाया वो वाकई काबिले तारीफ है। साफ-सफाई का महत्व, मास्क की अनिवार्यता जैसी बातों को मीडिया ने जनमानस तक पहुंचाया। इससे स्पष्ट है कि आपदा के दौरान पत्रकारिता लोगों को मानसिक बल देता है साथ ही जानकारियों के साथ सकारात्मक खबरों के माध्यम से भय और निराशा से उबारने का काम भी करता है। कोरोना काल के दौरान सोशल मीडिया पर फैलाई गई अफवाहों को छोड़ दें तो बाकि मीडिया की भूमिका काफी सकारात्मक व महत्वपूर्ण रही।

सन्दर्भ

- कोरोना काल में मीडिया की भूमिका रही अहम, www.livehindustan.com, 17 नवम्बर 2020
- नाजुक दौर में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपनी जिम्मेदारियां बखूबी निभाई- वैकेया नायडू, डी डी न्यूज
- कोरोना संकट में भारतीय प्रिंट मीडिया और भविष्य की चुनौतिया - कु मार कौस्तुभ
- कोरोना की वजह से राजस्थान में 22 से 31 मार्च तक लॉकडाउन, livehindustan.com, 22 मार्च 2020
- लॉकडाउन का असर -रोज कमाकर जीवन यापन करने वालों के सामने गहराने लगा रोजी-रोटी का संकट, दैनिक भास्कर, जयपुर
- स्वास्थ्य और संकट संचार के क्षेत्र में गंभीर शोध की जरूरत - डा. आनंद प्रधान
- कोरोना संकट में भारतीय प्रिंट मीडिया और भविष्य की चुनौतियां- कुमार कौस्तुभ
- कोरोना की चपेट में आने लगे अखबार भी- www.dw.com
- कोरोना से बचाव में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं कम्युनिटी रेडियो, - 3 मई 2020, दैनिक जागरण
- कोविड 19: सामुदायिक जागरूकता प्रसार में रेडियो की अहम भूमिका- संयुक्त राष्ट्र समाचार, वैश्विक परिप्रेक्ष्य
- सूचना का मुक्त प्रवाह और सही जानकारी की आवश्यकता, दोनों साथ-साथ चलते हैं: श्री अनुराग ठाकुर, सूचना और प्रसारण मंत्रालय।